IJAER/January-February 2021/Volume-10/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

आधुनिक युग के हिन्दी के उपन्यासकार

अपराजिता शांडिल्य

शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

डॉ अजय कुमार शुक्ल

प्राध्यापक हिन्दी कलिंगा विश्वविद्यालय नया रायपुर

सार

आधुनिक हिन्दी उपन्यास की शुरुआत प्रारंभिक 20वीं शताब्दी में हुई, जब हिन्दी साहित्य के नए धाराओं का उदय हुआ। मुंशी प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार, और साहित्यिक अभिनव ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की समस्याओं, व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक अंदरूनी जीवन, और राष्ट्रीय और सामाजिक मुद्दों को उजागर किया। उनके उपन्यासों में व्यापक व्यक्तित्व विकास, प्रेम और विवाह, और समाजिक असामान्यताओं के मुद्दे उठाए गए थे। आधुनिक युग में हिन्दी और अंग्रेजी के उपन्यासों में एक अंकुरण हुआ है, जहां साहित्यिक रचनाओं ने नई पहचान प्राप्त की है। उपन्यासों के माध्यम से हमें समय के साथ बदलते समाज की परिभाषा मिलती है और हमें धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत मुद्दों को समझने में मदद मिलती है।

मुख्य शब्दः आधुनिक युग ए हिन्दी के उपन्यासकार

परिचय

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने हिंदी साहित्य को एक यथार्थवादी दिशा दिया है। प्रेमचंद का साहित्य आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके अपने दौर में था। किसानों और गरीबों के जीवन के विषय में प्रेमचंद्र का समझ देखते हुए उनकी प्रासंगिकता आज के समय में और अधिक जान पड़ती है। प्रेमचंद का कथा साहित्य उस समय में जितना यथार्थवादी था आज के समय में भी उन सभी मूल्यों और मापदंडों पर खरा उतरता है ऐसा कहना कदाचित उचित है। प्रेमचंद की रचनाओं में किसान, स्त्री, गरीब और श्रमिकों के जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है तथा इनके जीवन पर अनेकों कहानियों और उपन्यासों को लिखा गया है। पूस की रात, गोदान, सद्गति जैसे साहित्यिक रूप इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। प्रेमाश्रम, रंगभूमि और गोदान में जिस प्रकार के किसानों का वर्णन किया गया है उस प्रकार के किसान आज भी भारत के गांवों में स्पष्टतया देखे जा सकते हैं। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने उपन्यास और कहानी के माध्यम स लोगों को हिंदी साहित्य से मिलाने का काम किया

तथा उनके द्वारा लिखा गया साहित्यिक रूप आज के समय में भी यथार्थवादी पटल पर श्रेष्ठता को प्रदर्शित करता है।

प्रेमचन्द का व्यक्तित्व

प्रेमचन्द का जन्म बनारस से लगभग चार मील दूर लमही नाम के गांव में 31 जुलाई, 1880 को कायस्थो के कुल में हुआ। इनके पितामह मुंशी गुरुसहाय पटवारी थे। इनके पिता मुंशी अजायबलाल डाक मुंशी थे और उनका वेतन लगभग पच्चीस रुपये मासिक था। माँ आनन्दी देवी सुन्दर – सुशील और सुघड़ महिला थी । अभी प्रेमचन्द आठ वर्ष के ही थे कि इनकी माता का देहान्त हा गया । विधुर जीवन की कठिनाई को देखकर इनके पिता ने दूसरी शादी कर ली । विमाता से प्रेमचन्द जी को स्नेह न मिल सका ।

प्रेमचन्द का बचपन गांव में बहुत ही गरीबी में व्यतीत हुआ । बचपन में इनकी शिक्षा–दीक्षा लमही में हुई और एक मौलवी साहब से उन्होंने उर्दू और फारसी पढ़ना सीखा। 13 वर्ष की आयु में प्रेमचन्द का नाम गोरखपुर के मिशन स्कूल में छठी कक्षा में लिखवाया गया और उसके दो वर्ष बाद ये क्वींस कॉलिज में पढ़ने लगे। सन् 1898 मे प्रेमचन्द ने क्वींस कॉलिज से मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। द्वितीय श्रेणी में पास होने के कारण झको इस कालेज में प्रवेश नहीं मिला। तब उन्होंने नवस्थापित सैंट्रल हिन्दू कॉलिज में प्रवेश के लिए प्रयत्न किया । किन्तु गणित में कमजोर होने के कारण वे सफल न हो सके। सन् 1910 ई० में जब गणित ऐच्छिक विषय हो गया तब प्रेमचद ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इण्टरमीडिएट की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके नौ वर्ष बाद 1919 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्रेमचन्द ने अंग्रेजी, फारसी और इतिहास विषय लेकर बी. ए. की परीक्षा भी द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की।

जब प्रेमचन्द पन्द्रह वर्ष के थे, उनका विवाह हो गया किन्तु इनका वैवाहिक जीवन सुखद नहीं रहा । पत्नी उम्र में बड़ी, बदसूरत और झगड़ालू थी इसी कारण पत्नी से प्रेमचन्द की अधिक देर तक नहीं बनी । प्रेमचन्द ने दूसरी शादी एक बाल विधवा से कर ली। इनकी दूसरी पत्नी का नाम शिवरानी था। प्रेमचन्द के जीवन को आगे बढ़ाने में इनको पत्नी शिवरानी देवी का बहुत योगदान रहा । उनसे एक लड़की कमला और दो लड़के श्रीपतराय और अमृतराय हुए। शिवरानी देवी के साथ प्रेमचन्द का दाम्पत्य जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ ।

प्रेमचन्द अभी 16 वर्ष के ही थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया । घर–गृहस्थी का सारा बोझ प्रेमचन्द के कन्धों पर पड़ गया । आमदनी का कोई साधन न था । घर की जमा पूंजी पिता की बीमारी और क्रिया–कर्म में खर्च हो गई थी। घर की दशा शोचनीय थी । गृहस्थी को चलाने के लिए ही बनारस में इन्होंने एक लड़की को ट्यूशन पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया ।

पिता की मृत्य हो जाने के कारण प्रेमचन्द को नौकरी की चिन्ता हुई। मैट्रिक में पढ़ते हुए ही वे किसी काम की खोज करने लगे। सन् 1899 में एक पुस्तक विक्रेता के यहाँ इन की भेंट एक प्राइमरी स्कूल प्रधानाध्यापक से हुई थी। उन्होंने प्रेमचन्द को अपने विद्यालय में अठारह रुपये मासिक वेतन पर सहायक अध्यापक रखा। वहां इनसे अतिरिक्त कार्य लिया जाता था जिससे अप्रसन्न होकर इन्होंने वहां से 2 जुलाई 1900 में त्याग पत्र दे दिया। इनको 1902 ई. में इलाहाबाद में अध्यापन प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। इस प्रशिक्षण में इन्होनें प्रथम श्रेणी प्राप्त की जिससे प्रभावित होकर शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने इनको मॉडल स्कूल इलाहाबाद में प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्त किया। प्रेमचन्द जी ने सन् 1904 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही स्पेशल वर्नाक्यूलक की परीक्षा हिन्दी–उर्दू में उत्तीर्ण की। जब प्रेमचन्द इलाहाबाद माडल स्कूल में प्रधानाध्यापक क पद पर थे तो इनका तबादला कानपुर हो गया। प्रेमचन्द मई 1905 से जून 1909 तक कानपुर रहे। जून 1909 में इनका तबादला महोबा (जिला हमीरपुर) में हो गया वहां यह डिस्ट्रिक बोर्ड के सबदृइन्सपेक्टर के पद पर नियुक्त किये गये। सन् 1921 में प्रेमचन्द ने महात्मा गाँधी जी के असहयाग आन्दोलन में भाग लेने के कारण नौकरी से इस्तीफा दे दिया । बाद में प्रेमचन्द कानपुर के हाईस्कूल में हैडमास्टर का कार्य करने लगे। 1922 ई. में प्रेमचन्द ने हेडमास्टर का कार्य भी छोड दिया ।

सन् 1923 में इन्होंने सरस्वती प्रेस की स्थापना की किन्तु प्रेस में घाटा होने के कारण इन्होंने प्रेस को बन्द कर दिया। सन् 1927 में वे श्माधुरीश पत्रिका के सह–सम्पादक के रूप में कार्य करने लगे और तीन वर्ष बाद सन् 1930 में प्रेमचन्द ने अपनी पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया। सन् 1932 में इन्होंने श्जागरणश पत्रिका का प्रकाशन भी प्रारम्भ कर दिया। इन दोनों पत्रिकाओं (हंस, जागरण) में इनको हानि उठानी पड़ी। सन् 1934 में प्रेमचन्द बम्बई की फिल्म कम्पनी श्अजन्ता सीने टोनश के लिए काम करने लगे । किन्तु फिल्म कम्पनी की नीतियाँ इन्हें अच्छी नहीं लगी और प्रेमचन्द फिल्म कम्पनी को छोड़कर बनारस में लौट आए।

प्रेमचन्द ने अपना सारा जीवन साहित्य साधना में व्यतीत किया। प्रेमचन्द जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, बाल साहित्य, जीवनी आदि लिखी। उन्होंने सदैव अपने को कलम का मजदूर माना। सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखना प्रारम्भ किया । किन्तु बाद में इन्होंने उर्दू के साथ–साथ हिन्दी में भी लिखना आरम्भ कर दिया। उन्होंने उर्दू में नवाबराय के नाम से कहानी संग्रह लिखा । यह कहानी संग्रह देश प्रेम की भावना से परिपूर्ण होने के कारण अंग्रेजी सरकार ने उसे जब्त कर लिया तो बाद में उन्होंने प्रेमचन्द के नाम से लिखना प्रारम्भ कर दिया। यह नाम इनके मित्र दयानारायण निगम ने दिया था। प्रेमचन्द ने साहित्य का सृजन धन कमाने के उद्देश्य से नहीं किया बल्कि इनका उद्देश्य तो जनता को जागरूक बनाना था। अन्याय, अत्याचार

और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाना था । प्रेमचन्द सरस्वती के सच्चे पुजारी थे। उन्होंने धन की कभी चिन्ता नहीं की।

प्रेमचन्द ने अपने जीवन में अनेक उतार–चढ़ाव देखे, किन्तु उन्होंने जीवन में कभी हार नहीं मानी प्रत्येक कठिनाई का सामना किया। प्रेमचन्द जी अत्यन्त सरल स्वभाव के सीधे सादे आदमी थे। ये खुले गले का खादी का कुरता और ढीली–ढाली धोती पहनते थे । उनके सम्पर्क में जो व्यक्ति आता वह उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था।

सन् 1936 में प्रेमचन्द की अध्यक्षता में प्रगतिशील लेखक संघ की बैठक हुई, जिस में मुंशी प्रेमचन्द को इस संस्था का अध्यक्ष नियुक्त किया गया ।

प्रेमचन्द ने अपने जीवन को ष्सपाट, समतल मैदानष् कहा था । उनके जीवन में कुछ भी असाधारण और सामान्य न था। अपनी आत्मकथा के टुकड़े में प्रेमचन्द लिखते हैं ष्मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं–कहीं गड्ढे तो हैं, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खण्डहरों का स्थान नहीं हैं। जो सज्जन पहाड़ों की सैर के शौकीन हैं उन्हें तो यहां निराशा ही होगी ।

प्रेमचन्द जी ने अपने को सदा मजदूर समझा। बीमारी की हालत में भी मृत्यु के कुछ दिन पहले तक भी वे कमजोर शरीर को लिखने के लिए मजबूर करते रहे। मना करने पर कहते, मैं मजदूर हूँ, मजदूरी किए बिना मुझे भोजन करने का अधिकार नहीं । उनके इस वाक्य में अभिमान का भाव भी था और अपने नाकद्रदान समाज के प्रति एक व्यंग्य भी । उनके हृदय में इतनी वेदनाएँ, इतने विद्रोह भाव और इतनी चिनगारियां भी थी कि उन्हें संभाल नहीं सकते थे । विनय की वे साक्षात् मूर्ति थे, परन्तु यह विनय उनके आत्माभिमान का कवच था। वे बड़े ही सरल थे, परन्तु दुनिया की धूर्त्तता और मक्कारी से अनभिज्ञ नहीं थे । उनका साहित्य इस बात का प्रमाण है। लाखों और करोड़ों की तादाद में फैले हुए भुक्खड़ों दाने–दाने को और चिथड़े – चिथड़े को मुहताज लोगों की वे आवाज थे। धार्मिक ढकोसलों को वे ढोंग समझते थे, पर मनुष्यता को वे सबसे बड़ी वस्तु मानते थे, यही प्रेमचन्द का अपना जीवन–दर्शन है। सन् 1936 में प्रेमचन्द बीमार हो गए इलाज के लिए ये लखनऊ गये, किन्तु वहां भी ठीक न हो सके 8 अक्टूबर 1936 को प्रेमचन्द का देहान्त हो गया।

किसी भी लेखक का सबसे बड़ा परिचय उसकी रचना से ही प्राप्त होता है। सच तो यह है कि पाठक रचना के जरिये ही लेखक को जानता है । साहित्यकार होने के कारण ही प्रेमचन्द विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वे अपने युग के ही नहीं बल्कि समस्त हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वोत्कृष्ट साहित्यकार थे। अपने साहित्यक जीवन में प्रेमचन्द जी ने एक दर्जन उपन्यास और लगभग तीन सौ कहानियां लिखी । प्रेमचन्द सामाजिक जीवन की रुढ़ियों, अन्धविश्वासों और पाखंडों के कट्टर

विरोधी थे । वे समाज में सुधार लाना चाहते थे और उनके साहित्य का उद्देश्य यही था जनता को जागरुक करना तथा देश की आजादी के लिए उन्हें उत्तेजित करना।

उद्देश्य

1. आधुनिक युग में बदलते परिवेश के साथ नारी के बदले अस्तित्व का अध्ययन करना
2. आधुनिक युग के हिन्दी के उपन्यासकार का अध्ययन करना

कृष्णा सोबती का जीवन परिचय :

जन्म :

कृष्णा सोबती का जन्म 19 फरवरी, 1925 में चनाब के किनारे पंजाब प्रांत के गुजराल जिले में हुआ । जो कि अब पाकिस्तान में है । लहलहाती गेहूँ की फसल पाँच नदियों का पानी और पठ्ठे जवानों की यह जो धरती है द्य वही समृद्ध द्य सुख धरती में कृष्णा सोबती का जन्म हुआ है ।

शिक्षा :

कृष्णा सोबती की शिक्षा दिल्ली, शिमला और लाहौर में हुई । लाहौर के फतेहचंद कॉलेज में पढ़ते समय देश का विभाजन हुआ और उन्हें दिल्ली आना पड़ा द्य स्वतंत्रता आंदोलन का समय था । सभी आजादी के नशे में थे । इससे छोटे बच्चे भी अलग नहीं थे । अर्थात् इसी आजादी के नशे में कृष्णा भी परे नहीं थी । इसलिए उनकी शिक्षा अलग अलग स्थानों पर हो गई ।

पारिवारिक जीवन :

कृष्णा सोबती का परिवार छोटा सुखी और समृद्ध था । शिक्षा के प्रति उनमें विशेष रूचि थी द्य कृष्णा सोबती के पिताजी फौज में काम करते थे । इनका परिवार कृषि से भी जुड़ा होने के कारण गाँव और वहाँ के जीवन से उनका गहरा रिश्ता रहा है । उन्होंने शहर और गाँव को अपने अनुभव से गुजरते देखा है । इस संदर्भ में वे कहती है कि "गाँव को जब शहर की नजर से देखते है तो यह विचार मन में आता है कि यह उनकी विरासत का हिस्सा है।" इससे उन्हें गाँव के प्रति लगाव है यह स्पष्ट हो जाता है । कृष्णा सोबती का बचपन अपने माता पिता तथा भाई बहनों के बीच बीता । कृष्णा सोबती को तीन बहनें और एक भाई है । बचपन में घर में लाड प्यार और अनुशासन की कोई कमी नहीं थी । पुस्तकों का परिचय उन्हें बचपन में ही हुआ था । रात के साढे नौ बजे कमरे की बत्ती बुझाई जाती थी । पिताजी उन्हें अच्छी अच्छी किताबें पढ़ाकर सुनाते । आज उनकी यह आदत बदल गई है । वे रात दस बजे लिखने बैठती है तो सुबह 3

बजे तक लिखती रहती है। अलग अलग पुस्तकों को सभी भाई बहन अपनी–अपनी रूचि के अनुसार पढ़ा करते थे ।

कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व क विविध पहलु

स्वातंत्र्योत्तर महिला साहित्यकारों में कृष्णा सोबती एक सफल लेखिका के रूप में दिखाई देती है । इसके अलावा कहानी, संस्मरण और निबंध के क्षेत्र में भी उन्होंने अच्छी तरह से लेखन किया है । अपनी स्वतंत्र व्यक्तित्व चेतना और युगीन यथार्थ के साक्षात्कार स उन्होंने जिस दृष्टिकोण को अपनाया है, उसे अपने रचनाओं के द्वारा व्यक्त करने का प्रयास किया गया है । सुनंत कौर लिखते है "किसी भी साहित्यिक कृति की जड़े श्परिवेशश में ही होती है और परिवेश सापेक्ष होकर ही कोई कृति प्रामाणिक बन पाती है ।ष्ष इस संदर्भ से यह स्पष्ट होता है साहित्यकार परिवेश से ही जुड़ा रहता है । परिवेश से प्रभावित होने के कारण उसकी रचना पर भी परिवेश का प्रभाव पडता है ।

किसी भी साहित्यकार का अध्ययन करने से पूर्व उसके व्यक्तित्व का परिचय कराना अनिवार्य है । व्यक्ति के आचार विचार, रहन–सहन, परिवेश आदि बातें उसकी रचनाओं में प्रतिबिंबित होते हैं । साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके कृतित्व पर दिखाई देता है । कृष्णा सोबती एक महिला साहित्यकार है । अतः यहाँ पर उनके व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं देखना अनिवार्य है द्य

महिला साहित्यकार के रूप में अलग पहचान

कृष्णा सोबती स्वातंत्र्योत्तर महिला साहित्यकार के रूप में अलग पहचान रखती है । उन्होंने अपनी कहानी तथा उपन्यास में पारिवारिक तथा नारी जीवन से संबंधित सभी समस्याओं को प्रस्तुत किया है । कृष्णा सोबती की नारी विशेष रूप से दबंग नारी है । निड़र है । रविंद्र तथा शरत के नारी के समान वह शांत नहीं तथा ओस के कणों के समान नहीं. वह निड़र है। नारी स्वतंत्रता की अभिलाषी है। साथ ही उन्होंने एक ही नारी को अलग अलग रूपों में प्रस्तुत किया है । नारी मन के विविध पहलु तथा नारी जीवन का चित्रण किया है । श्बादलों के घेरेश कहानी में बीमारी तथा मोहभंग की स्थिति को उजागर किया है । श्दादी अम्माश कहानी में पारिवारिक संघर्ष को चित्रित किया है । श्दो बाहंरू दो राहेंश कहानी में उन्होंने दो नारियों को अलग– अलग रूप में प्रस्तुत किया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने अपनी कहानियों को अलग– अलग रूपों में प्रस्तुत किया है । कृष्णा सोबती ने समाज के हर स्तर को अपनी कहानी का विषय बनाया है । निम्न वर्ग से लेकर उच्च वर्ग तक की सभी का वर्णन बखूबी से किया है। इनके कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर काल की होने के कारण उनकी कहानियों में तत्कालीन परिवेश का स्पष्ट रूप दिखाइ देता है द्य अतः यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबती महिला साहित्यकार के रूप में अपनी अलग पहचान रखती है ।

सादगी की कायल

कृष्णा सोबती याने सादगी द्य सादगी याने कृष्णा सोबती ऐसा समीकरण ही बना है द्य कृष्णा सोबती को सादगी अधिक पसंद है द्य उन्हें सीधे–सादे लोग ज्यादा पसंद है, उनकी राय में यही वे लोग होते हैं जिनकी आँखों में आम इन्सान की खुशियाँ, गम, आस्थाओं का असली रंग रूप देख सकते हैं द्य कृष्णा सोबती यह कहती है "उनकी अलबम में कुछ ऐसे लोगों के चेहरे हैं जिन्हें मिलकर, जानकर उन्होंने कुछ ऐसा पाया जो किसी किताब में न पाया । ष्ष ष्हम – हशमतश में उनका सादगी को पसंद करनेवाला मित्र परिवार दिखाई देता है द्य उन्हें दिखावापन अथवा प्रदर्शन की प्रवृत्ति कभी पसंद नहीं आती। इससे कृष्णा सोबाती की सादगी स्पष्ट होती है ।

स्वभाव

कृष्णा सोबती के स्वभाव के बारे में ऐसा कहा जाता है कि वह एक शांत स्वभाव की है द्य लेकिन जब गुस्सा आता है तो बहुत ही तेज द्य स्वयं कृष्णा सोबती कहती है ष्हर कृति के साथ आप पुराने पड़ जाते है और नए हो उठते ही ।

इससे जुड़ा रहता है स्वभाव का निर्विकार ।"1/2 साथ ही वे स्वभाव के बारे में लिखती ष्स्वभाव में वहीं खानी है । तासीर में वहीं अनोखा पानी है । सच तो यह है, सिर्फ चनाब ही चनाब का सानी है।" इससे उनकी स्वभावगत विशेषता स्पष्ट रूप से देखी जाती है द्य यहाँ पर यह स्पष्ट हो जाता है कि कृष्णा सोबती का स्वभाव सीधा सादा और तेज है । झूठ से परहेज है । सत्य की काबिल है ।

जिंदादिल व्यक्तित्व

कृष्णा सोबती आज 84 साल की हो चुकी है फिर भी वह मन से जवान है द्य उनकी शसिक्का बदल गयाश कहानी की शाहनी इतनी बूढ़ी हो चुकी है लेकिन अंत तक वह जीने की चाह रखती है। इस बूढी शाहनी के समान कृष्णा सोबती में भी जीने की लालसा है । कृष्णा सोबती हरदम उत्साही, ताजा, नित्य और नूतन साथ ही आनंदित रहनेवाली महिला है जो अपने जिंदादिल व्यक्तित्व की पहचान कराती है ।

निडर व्यक्तित्व

कृष्णा सोबती निडर है। सही बात को वे स्पष्ट रूप से कहने से डरती नहीं । वह हंस पत्रिका में लिखती है ष आपका संपादकीय पढ़ा । पढ़ते ही पूरे वजूद में राष्ट्रीय प्रेम की अविरल धारा प्रवाहित हो उठी । देश जो हवाई अड्डे पर न कर वह कमाल कर दिखाया आपके क्राइसिस मैनजमेंट दल की शहबाजों ने द्य हम रहे होंगे अपने ही अड्डे पर नाकामयाब, मगर कसम खुदा

की आपकी दूर अंदेशी और हिम्मत ने बहादूर क्रायसिस दस्ता जुटाकर विमान अपहरण का दंश ही भूला दिया ।

साधुवाद ! अखिल भारतीय हिंदी विभागों से प्रस्फुटित निर्णायक मंडल ने जिस समझ–बूझ और विलक्षण पांडित्य से पोषित ऐतिहासिक दृष्टि से हिंदी कथा शताब्दी पर नजर डाली है वह निश्चय ही प्रशंसनीय है ।ष इस तरह कृष्णा सोबती निडरता से लिखती है, जिसमें उनके निडर व्यक्तित्व का दर्शन होता है । उन्हें जो बातें जचती नहीं उस पर वे करारा व्यंग्य करती है । वे सच को सच तथा झूठ को झूठ कहने का सामर्थ्य रखती है द्य जिससे उनके निडर व्यक्तित्व की पहचान होती है ।

आधुनिक युग के हिन्दी के उपन्यासकार 'जयशंकर प्रसाद'

जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय

प्रत्येक साहित्यकार का कृतित्व उसके व्यक्तित्व से प्रभावित रहता है और उसका व्यक्तित्व अंश रूप में उसके द्वारा अभिव्यक्त होनेवाली क्रियाओं प्रतिक्रियाओं मे आभास पाता है । यदयपि व्यक्तित्व का अधिकांश भाग अव्यक्त रहते हुए भी साहित्यकार को प्रेरित करता है। तथापि उसका अभिव्यक्त किया गया व्यक्तित्व उस रचनाकार की रचनाओं को समझने और उनका सर्वांगीण अध्ययन करने में सहायक होता है। वस्तुतः व्यक्तित्व और कृतित्व का गहरा संबंध होता है। लेखक का व्यक्तित्व उसकी रचनाओं मे सर्वत्र व्याप्त रहता है।

व्यक्तित्व

लेखक का व्यक्तित्व उसके साहित्य में नजर आता है और व्यक्तित्व का निर्माण उसके सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक और धार्मिक परिवेश में ही होता है। जिसके बीच रहकर वह बड़ा हुआ है। जीवन में घटित घटनाएँ साहित्य सृजन लिए प्रेरक होती है। इसके लिए जन्म, माता–पिता, परिवार, शिक्षा, विवाह, संतान, साहित्य सृजनारंभ, कृतित्व का परिचय आदि को विस्तार से जानना आवश्यक है। अंतः प्रसाद जी के समग्र व्यक्तित्व की जानकारी प्रस्तुत है।

जन्म :

हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म माघ शुक्ल दशमी विक्रमीय संवत् १९४६ में काशी के माहेश्वर कुल में बहुप्रतिष्ठित एवं सुसंपन्न परिवार में हुआ था । प्रसाद जी के पिताजी का नाम शिव रतन साहु और माताजी का नाम देवी प्रसाद साहु था। उनके भ्राता का नाम श्री शंभुराम था ।

परिवार :

प्रसाद जी सुंघनी साहु नाम से विख्यात समृध्द परिवार में जन्मे थे। वह ऐश्वर्यवान पिता की प्रिय संतान होने के कारण परिवार में सब के आँखो के तारे थें। उनके पिताजी काशी के लब्ध प्रतिष्ठ नागरीक थे। पिताजी की उदारता और कलाप्रेम विख्यात था। प्रसादजी के पिता परम शैव भक्त थे। पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होने शिवजी की कठोर आराधना की थी । शंकर के प्रसाद से कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म हुआ था ।

शिक्षा :

प्रसाद को बचपन से ही लेखनी से खेलना अच्छा लगता था । उनकी साहित्यिक अभिरूची में नजर आता है। प्रसाद का बचपन वैभव पूर्ण वातावरण में व्यतीत हुआ । प्रसाद के पिता उदार – दानी थे। प्रसाद ने बचपन में विभिन्न रमणीय धार्मिक स्थलों की यात्रा की, जिसका प्रभाव उनके काव्य में नजर आता है। प्रसाद नौ वर्ष की आयु मे समस्या पूर्ति करने लगे थे । प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई थी। विधिवत् शिक्षाभ्यास हेतू दस वष की आयु में उन्हे काशी के स्थानीय क्वींस कालेज में भेजा गया ।

प्रसाद ने हिन्दी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का अध्ययन घर पर ही किया । श्रस सिध्दश उनके प्रधान गुरू थे। क्वींस कालेज में शिक्षा प्राप्त करके भी दीन बन्धु ब्रम्हचारी से इन्होने संस्कृत का अध्ययन किया। परिवारिक समस्या के कारण नियमित शिक्षा पाने में असमर्थ रहें। माता–पिता और भाई के देहावसान से परिवार की जिम्मेदारी प्रसाद पर पड जाती है । सम्पत्ति कर्ज में चली जाती है।

कालेज की पढाई होड कर प्रसाद ने घर पर ही शिक्षा प्रारंभ की सगे–संबंधियों से भी उन्हे अनेक प्रकार के कष्ट सहने पढते है।

विवाह :

प्रसाद जी का विवाह बीस वर्ष की आयु में होता है। दस वर्ष बाद इनकी पत्नी का देहांत हो जाता है। भाभी के आग्रह के कारण प्रसाद को दुसरा विवाह करना पडता है। किन्तु किस्मत उनका साथ नही देता विवाह के एक वर्ष बाद उनकी दूसरी पत्नी दिवंगता हो जाती है । पुनरू भाभी के आग्रह के कारण पाच वर्ष के बाद उनका तिसरा विवाह हो जाता है।

संतान :

प्रसाद जी को उनकी तिसरी पत्नी से एक पूत्र की प्राप्ति हो जाती है। उनके पुत्र का नाम रत्नशंकर था । प्रसाद ने अपने पुत्र का नाम अग्रज की स्मृती मे उनके नाम को परिवार्तित कर रखा था ।

साहित्यिक प्रेरणा :

प्रसाद के पिता साहित्यिक रूचि के व्यक्ति थे। उनके घर पर कवि – गोष्टियों का आयोजन होता और प्रसाद बचपन से ही उनमें भाग लिया करते थें। भारत के भतीत का गहराई से अध्ययन किया था। भारतीय संस्कृति पर उन्हें गर्व था ।

पठन–पाठन :

प्रसाद जी में छोटी उम्र में ही पठन–पाठन की प्रवृत्ति आ गई थी । दीन बन्धु ब्रम्हचारी से संस्कृ त का अध्ययन किया । वैदिक वाड्मय तथा भारतीय दर्शन का स्वाध्याय कर ज्ञानार्जन किया।

साहित्य सृजनारंभ :

नौ वर्ष की आयु में प्रसाद समस्या पूर्ति करने लगे थे । प्रसाद ने नौ वर्ष की अल्प आयु में ही श्अमरकोशश तथा श्लघु सिध्दांत कौमुदीश कष्ठस्य कर ली थी। उन्होने गजलें भी लिखी थी । १५–१६ वर्ष की आयु से वह कहानी, नाटक और कविता लिखने लगे थें ।

"जीवन के इन उतार–चढावों को धैयपूर्वक सहन करते हुए प्रसाद साहित्य साधना में रत रहे। वे अपने स्वास्थ के प्रति यदयपी पूर्णतः सजग रहते थे, परंतु जीवन के अंतिम प्रहर में वे रोगग्रस्त हो गये। सवंत् १९३३ में वे सर्व प्रथम बुखार से पीडित रहे और उन्हे उदरशूल हो गया। जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि वे राजयक्ष्मा से पिडीत हैं। इसी रोग से उनकी पत्नी चल बसी थो। अंतरू प्रसाद इस रोग के भयंकर परिणामों से परिचित थें। शुभचिंतकों ने उन्हें पर्वतीय स्थान पर जाने का परामार्श दिया । किन्तु काशी छोडना उनके लिए असहय था । संवत् १९९४ मे चर्मरोग ने भी उन पर आक्रमण कर दिया और उनका शरीर जर्जर होने लगा। अंतिम दिनों मं वह पलंग पर ही पड़े रहते थे । अतः कार्तिक शुक्ल एकादशी वि. स. १९४७ नवम्बर सन् १९३७ को अडतालीस वर्ष की आयु में हिन्दी साहित्य का यह अमर कवि दिवंगत हो गया ।

निष्कर्ष

उपन्यासों में पात्रों और उनके समाज के बीच संघर्ष को जिस रूप में व्यक्त किया जाता है, वह अंततः नागरिक समाज के लिखित और अलिखित कोड द्वारा निर्धारित किया जाता है, जिसमें व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों का मूल वैचारिक मूल होता है। इन उपन्यासों में व्यक्ति और

समाज के बीच संतुलन अनिश्चित है और नियमित रूप से व्यक्ति की आकांक्षाओं पर जोर देने की अपेक्षा की जाती है। पिछले अध्यायों में हमने जिन उपन्यासों की जांच की है उनमें चरित्र और उनकी सामाजिक दुनिया के बीच संबंध गुणात्मक रूप से भिन्न हैं। इन उपन्यासों में सामाजिक संदर्भ समुदाय द्वारा प्रदान किया गया है जो व्यक्तिगत चरित्र के जीवन में एक मजबूत नियंत्रण कारक बना हुआ है।

भारत में उपन्यासों में समुदाय को एक विशिष्ट श्रेणी के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि यह अत्यधिक प्रभाव पात्रों के विकास, कथानक संरचनाओं और यहां तक कि आधिकारिक परिप्रेक्ष्य को भी प्रभावित करता है। चूंकि उपन्यासों में दर्शाए गए विभिन्न समुदाय एक–दूसरे से बहुत अलग हैं, सामुदायिक व्यक्तिगत संबंधों के चित्रण के लिए भी चर के व्यापक संयोजन की आवश्यकता होती है जो इंग्लैंड में लिखे गए उपन्यासों से बहुत अलग है, जहां कुल मिलाकर, व्यक्तिवाद प्रमुख वैचारिक जोर है।

संदर्भ

1. शर्मा के.के. : ऑप.सीआईटी, पी.1–2
2. के. वेंकट रेड्डी और पी. बायापा रेड्डी: (1999) श्द इंडियन नॉवेल विद ए सोशल पर्पसश (नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स), पी.5
3. मुंशी के.एम. : (1979) "आधुनिक भारतीय भाषाओं में साहित्यष, पीपी मेहता द्वारा उद्धृत ष्इंडो–एंग्लियन फिक्शन एन असेसमेंटष (बरेलीरू पीबीडी), पी.61
4. डॉ पाठक ए.एन. :(2008) तुलनात्मक भारतीय अंग्रेजी साहित्य‘‘ (कानपुर: भास्कर प्रकाशन), पी.95–96
5. मुल्क राज आनंद :(1948) द किंग–सम्राट की अंग्रेजी‘‘, (बॉम्बेरू हिंद किताब), पृ.28–29 इबिड, पृ.33
6. वर्गीज सी.पॉल: (1975)श्एसेज ऑन इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशश, (नई दिल्लीरू एन.वी. प्रकाशन), पी.15.
7. एहरेनबर्ग इल्यारू "n राइटर एंड हिज क्राफ्टष, पी.45.
8. अयंगर के.आर.एस. : (1985) ष्इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशष (नई दिल्लीरू स्टर्लिंग पब्लिशर्स), पी.45.

9. डॉ. पाठक, ए.एन. : (2008)२तुलनात्मक भारतीय अंग्रेजी साहित्य‘‘, (कानपुररू भास्कर प्रकाशन) पी. 73.

10. अयंगर, के.आर. श्रीनिवास: (1985)२इंडियन राइटिंग इन इंग्लिश’, (नई दिल्लीरू स्टर्लिंग पब्लिशर्स।) पी.28।

11. परमेश्वरन उमा: (1976)२ए स्टडी ऑफ रिप्रेजेंटेटिव इंडो–इंग्लिश नॉवेलिस्ट्स’, (नई दिल्लीरू विकास पब्लिशिंग हाउस), पी.4

12. पी.पी. मेहता:(1979) इंडो–एंग्लियन फिक्शन एन अयंगर के.आर.एस. रू (1983) शलिटरेचर एंड ऑथरशिप इन इंडियाश (नई दिल्लीरू स्टर्लिंग पब्लिशर), पी.20

13. अंग्रेजी साहित्य का कैम्ब्रिज इतिहास, खंड ग्प्ट, पृष्ठ 334। पी.पी. मेहता द्वारा उद्धृत: ऑप. सी.टी., पी.5

14. अयंगर के.आर.एस. : ऑप.सीआईटी, पी.22

15. वर्गीज पॉलरू (1971)२प्रॉब्लम्स ऑफ द इंडियन क्रिएटिव राइटर इन इंग्लिश’, (बॉम्बे: सोमाया पब्लिकेशन्स,) पी.99

16. मुखर्जी मीनाक्षी: (1971) "n ट्विस–बॉर्न फिक्शनष्,

17. गोकक वी.के. : (1957)२आधुनिक भारतीय में साहित्य का परिचय

18. आनंद मुल्क राज :(1948)ष्द किंग एम्परर्स इंग्लिशष्, (बॉम्बे: हिंद किताबें), पी.19

19. डॉ. तिलक रघुकुल: (2004), श्री अरबिंदो, द रेनेसां इन इंडिया ए क्रिटिकल स्टडी, (नई दिल्ली: करोल बाग), पृ.55

20. सी. सान्याल समरेस: (1984) श्इंडियननेस इन मेजर इंडो–इंग्लिश नॉवेल्सश (बरेलीरू पीबीडी), पी.1